International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 25-09-2022, Accepted: 11-10-2022, Published: 28-10-2022
Volume 8, Issue 5, 2022, Page No. 52-61

हिन्दी, अंग्रेजी तथा संस्कृत माध्यम के अध्ययनरत् विद्यार्थियों की चितंन शैली तथा शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

विनोद कुमार धस्माना
असिस्टेड प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, निम्बस ऐकडमी आफ मैनेजमेंट, बंशीवाला, उत्तराखंड, भारत

सारांश
प्रस्तुत शोध में तीनों माध्यमों (हिन्दी, अंग्रेजी तथा संस्कृत) के विद्यार्थी की चितंन शैली तथा शैक्षिक उपलब्धि पर अध्ययन किया है। प्रस्तुत लघु शोध में डॉ0स्मृति स्वरूप तथा डी0 के0 मेहता द्वारा निर्मित चितंन मापनी के माध्यम से आंकडों का एकत्रीकरण किया गया है। प्रस्तुत प्रश्नावली को 9 से 12 वर्ष की आयु के विद्यार्थियों में प्रयोग किया इसमें चार भाग दिये गये है। प्रत्येक भाग 25 अंक का है। इसमें प्रथम भाग स्मृति (Memory), द्वितीय भाग सम्प्रत्यय विकास (Concept Development),तृतीय भाग तार्किक (Reasoning) और चतुर्थ भाग समस्या–समाधान (Problem-Solving) से संम्बधित है।

मूल शब्दः माध्यम (प्राथमिक, माध्यामिक, उच्चत्तर माध्यमिक) चिंतन शैली, शैक्षिक उपलब्धि

प्रस्तावना
भारत की प्राचीन शिक्षा पद्धति में हमें अनौपचारिक तथा औपचारिक दोनों प्रकार के शैक्षिक केन्द्रों का उल्लेख प्राप्त हेाता है। औपचारिक शिक्षा मन्दिरों, आश्रमों और गुरूकुलों के माध्यम से दी जाती थी, जबकि परिवार, पुरोहितो, पण्डितों, सन्यासियों और त्यौहार प्रसंग आदि के माध्यम से अनौपचरिक शिक्षा प्राप्त होती थी। धर्मसूत्रों में इस बात का उल्लेख है कि माता ही बच्चे की श्रेष्ठ गुरू है। बालकों को उसके लक्ष्य तक पहुचाने में शिक्षक की अहम् भूमिका होती है। शिक्षक और शिक्षार्थी के मध्य संवाद की प्रक्रिया का आधार भाषा ही होती है, तथा यह आपसी तथा यह आपसी तालमेल का साधन भी है।
बच्चे के भविष्य को उज्जवल बनाने में अध्यापक की भूमिका होती है। अध्यापक बालकों की आवश्यताओं के अनुसार शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षण विधियों का प्रयोग करता है। अध्यापक तथा शिक्षार्थी के मध्य पिता का सम्बन्ध होता है।

1. प्राचीन काल में शिक्षा
प्राचीन भारत में गुरू के प्रत्यक्ष निरीक्षण में रहकर विद्योपार्जन करना श्रेष्ठ माना जाता था, अतएव् विद्यार्थी गूरूकलों में ही रहते थे। गुरूजन अपने घर पर ही विद्यार्थी के आवास–निवास की व्यवस्था करते थे।
प्राचीन भारत में जिस शिक्षा व्यवस्था का निर्माण किया गया था उसका कालांन्तर में ह्रास हुआ। विदेशियों के आवागमन के कारण भारतीय शिक्षा व्यवस्था को कई चुनौतियों व समस्याओं का सामना करना पडा। वर्ष 1890 तक भारत में गुरूकुल की प्रथा चलती आ रही थी, परन्तु मैकाले वर्ष (1934) द्वारा प्रचलित अग्रेंजी शिक्षा के संक्रमण के कारण भारत की प्राचीन शिक्षा व्यवस्था में अन्तर हुआ। और भारत में कई गुरूकुल बंद हुए और उनके स्थान पर कान्वेंट और पब्लिक स्कूल खोले गए।
प्राचीन भारत की शिक्षा का प्रारम्भिक हम ऋग्वेद में देखते हैं। ऋग्वेद युग की शिक्षा का उदेश्य था–तत्व साक्षात्कार बह्मचर्य, तप और योगाभ्यास से तत्व का साक्षाकार करने वाले जन ऋषि, विप्र, वैद्यस, कवि, मुनि, मनीषी के नामों से प्रसिद्ध थे। साक्षात्कृत तत्वों का मंन्त्रों के रूप में संग्रह होता गया। पांच वर्ष में बालक की प्राथमिक शिक्षा आरम्भ कर दी जाती थी। गुरूगृह में रहकर गुरूकुल की शिक्षा प्राप्त करने की योग्यता उपन्नयन संस्कार से होती थी। 8वें वर्ष में ब्राह्मण बालक के, 11 वें वर्ष में क्षत्रिय के और 12 वर्ष में वैश्य के उपन्नयन संस्कार की विधि थी। बह्मचर्य का पालन करते हुए विद्यार्थी गुरूगृह में 12 वर्ष तक वेदाध्ययन करते थे तब वे स्नातक कहलाते थे।

2. मध्यकालीन शिक्षा
मध्यकालीन भारत में मुख्यरूप से धार्मिक शिक्षा के साथ–साथ इतिहास, साहित्य, व्याख्यान, तर्कशास्त्र, गणित, कानून इत्यादि की पढाई होती थी। राजकुमारें के लिए महलों के भीतर शिक्षा का प्रबध था। राजव्यवस्था सैनिक संगठन, मुद्रासंचालन, साहित्य, इतिहास, व्याकरण, कानून आदि का ज्ञान गृह–शिक्षकों से प्राप्त होता था। शिक्षा में छात्र और शिक्षकों के आपसी संबध प्रेम और सम्मान के थे। सादगी, सदाचार, विद्याप्रेम और धर्माचरण पर जोर दिया जाता था। कंठस्थ करने की परम्परा थी। प्रश्नोत्तर, व्याख्या और उदाहरणों द्वारा पाठ पढ़ाए जाते थे। मुसलमान शासकों के संरक्षण के अभाव में भी संस्कृत काव्य, नाटक, व्याकरण, दर्शन ग्रन्थों की रचना और उनका पठन–पाठन बराबर होता रहा।

3. आधुनिक काल
आधुनिक काल भारत में आधुनिक शिक्षा की नींव यूरीपीय ईसाई धर्म प्रचारकों तथा व्यापारियों द्वारा डाली गई। उन्होने कई विद्यालय स्थापित किए। प्रारभ में मद्रास ही उनका कार्यक्षेत्र रहा। धीरे–धीरे कार्य क्षेत्र का विस्तार बंगाल में भी होने लगा। इन विद्यालयों में ईसाई धर्म की शिक्षा के साथ–साथ इतिहास, भूगोल, व्याकरण, गणित, साहित्य आदि विषय भी पढाए जाते थे। रविवार को विद्यालय बंद रहता था। शिक्षक छात्रों की पढाई अनेक श्रेणियों में कराते थे। अध्यापन का समय नियत था। साल भर में छोटी बड़ी अनेक छुट्टी हुआ करती थी। वर्ष 1792 में बनारस में संस्कृत कांलेज जोनाथन की स्थापना डंकन द्वारा की गयी ।
प्राथमिक शिक्षा की दशा की जांच करते हुए शिक्षा के प्रश्नों पर विचार करने के लिए वर्ष 1882 में सर विलियम विल्सन हंटर की अध्यक्षता में भारतीय शिक्षा आयोग गंठन किया गया। आयोग ने प्राथमिक शिक्षा के लिए कई उचित सुझाव दिये और शिक्षा का माध्यम माध्यमिक स्तर में अंग्रेजी विषय रहे। माध्यमिक स्कूलों के सुधार और व्यावसायिक शिक्षा के प्रसार के लिए आयोग ने सिफारिश की। सहायता अनुदान प्रथा सरकारी शिक्षा विभागों का सुधार, धार्मिक–शिक्षा, स्त्री–शिक्षा, मुसलमानों की शिक्षा इत्यादि पर भी कई सुझाव प्रस्तुत किये गये।

4. स्वतन्त्रता के बाद विभिन्न आयोगों का गठन एंव भाषाई संम्बधि प्रावधान

आजादी के बाद राधाकृष्ण आयेाग (वर्ष 1948–49, इण्डियन एजूकेशन रिब्यू) में जिसमें तीन भाषाओं में पढाई की व्यवस्था का परामर्श दिया गया था। आयेाग का कहना था कि माध्यमिक स्तर पर प्रादेशिक भाषा, हिन्दी भाषा और अंग्रेजी भाषा की शिक्षा दी जाय। स्वतंन्त्रताप्राप्ति के पश्चात शिक्षा में प्रगति होने लगी तथा सभी भारतीय भाषाओं को महत्व दिया जाने लगा।

मुदालियर आयोग (माध्यमिक शिक्षा आयोग वर्ष 1952–53, इण्डियन एजूकेशन रिब्यू) ने माध्यमिक शिक्षा की उन्नति के लिए अनेक सुझाव दिए। माध्यमिक शिक्षा के पुनर्गठन से शिक्षा में पर्याप्त सफलता प्राप्त हुई। माध्यमिक शिक्षा आयोग ने माध्यमिक शिक्षा के पाठ्यक्रम सम्बन्धी विषय पर कई सुझाव दिये जो मातृभाषा, राष्ट्रभाषा, हिन्दी, अंग्रेजी, सामान्य विज्ञान, शारीरिक शिक्षा, त्रिभाषा सूत्र(मातृभाषा, अंग्रेजी और हिन्दी) से सम्बधित थे। मुदालियर आयोग ने शिक्षा के पाठ्यक्रम को 7 वर्गों में बाटा जिसमें वाणिज्य समूह, कृषि, मानव–शास्त्र–समूह, विज्ञान–समूह, औद्योगिक समूह, ललिल–कला समूह, गृहविज्ञान समूह थे। माध्यमिक शिक्षा की अवधि को दो भागों मे विभाजित करने का सुझाव दिया गया, जिसमें 3 वर्ष तक जूनियर शिक्षा, 4 वर्ष तक उच्च माध्यमिक शिक्षा का प्रावधान किया गया। विश्वविद्यालय अनुदान आयेाग वर्ष (1953) केन्द्रीय सरकार का एक आयोग है जो विश्वविद्यालय को मान्यता देता है। यही आयोग सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालयों एंव महाविद्यालयों को अनुदान भी प्रदान करता है। इसका मुख्यालय नयी दिल्ली में है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (कोठारी शिक्षा आयेाग वर्ष 1964–66) ने कई सुझाव दिये जिसमें 14 वर्ष तक के बच्चों के लिए निःशुक्ल एवं अनिवार्य शिक्षा, 1023पद्धति का विकास प्रमुख थे। आयोग की सिफारिश के आधार पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति को वर्ष 1968 में भारत की लोकसभा द्वारा अनुमोदित किया गया था लेकिन तीन भाषाई फ्रॉमूले की सिफारिश को उत्तरी हिन्दी राज्यों द्वारा अग्रेंजी घृणा और दक्षिण राज्यों से हिन्दी नफरत के कारण खारिज कर दिया। नई शिक्षा नीति वर्ष (1986, इण्डियन एजूकेशन रिब्यू) का उद्देश्य असमानताओं को दूर करने विशेष रूप से भारतीय महिलाओं, अनुसूचित जनजातियों और अनुसूचित जाति समुदायों के लिये शैक्षिक अवसर की बराबरी करने पर विशेष जोर देना था। इस नीति ने प्राथमिक स्कूलों को बेहतर बनाने के लिए "ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड" की शुरूवात की। माध्ययिक शिक्षा के पुर्नसंगठन की अनुप्रशंसा की गई। विद्यालय के अनिर्वाय विषयों जैसे–भाषा, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, सांख्यिकी, मानविकी, इतिहास और कुछ अवधारणाओं जैसे नागरिक के राष्ट्रीय और संवैधानिक उत्तरदायित्व का विद्याथियों के शिक्षण में विशेष महत्व दिया गया। संशोधित राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1992) में भाषाओं के विकास के लिए त्रिभाषा–सूत्र को बढ़ावा दिया गया और हिन्दी को राष्ट्रीय भाषा के रूप मे विकास करने की अनुप्रशंसा की गई।

एन0सी0एफ0 (2009, सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन) ने सुझाव दिये गया कि बच्चों के लिये मातृभाषा महत्वपूर्ण स्थान रखती है। अधिगम–शिक्षण परिस्थितियों में इसका प्रयोग किया जाता है तथा स्पष्ट है कि जो पढ़ाने का माध्यम मातृभाषा होनी चाहिए। सभी आयोग ने स्वतंत्रा से पहले या स्वंतत्रता के बाद त्रिभाषा में अधिक महत्व दिया। भारत देश में राष्ट्रीय तथा अंतराष्ट्रीय सम्बधों एंवम् संप्रेषण व्यवस्था की निर्वाह के लिए भारतीय भाषाओं के शिक्षण पर बल दिया गया जिससे अपने देश की संस्कृति और विचारों को समझा जा सके, जिसमें आधुनिक भारतीय भाषा, क्लासिक भाषाएं, भारतीय अथवा आधुनिक विदेशी भाषाओं के शिक्षण से सम्बधित सुझावों पर बल दिया गया। कोठारी आयोग ने प्राथमिक, माध्यमिक शिक्षा और उच्च अर्थात विश्वविद्यालय शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण सुझाव दिए। यह आयोग पहला ऐसा आयोग था जिसने विस्तार से भारतीय शिक्षा पद्धति का अध्ययन किया। इस आयोग का काल तीसरी पंचवर्षीय योजना रही जिसने नई शिक्षा पद्धति के पुर्नःविचार की बात पर बल दिया।

प्रस्तावित नई शिक्षा नीति (वर्ष 2020) में भी स्कूल शिक्षा में मातृभाषा और स्थानीय भाषा को अहमियत दी गई है। सरकार की योजना है कि स्कूली शिक्षा से उच्च शिक्षा तक भारतीय भाषाओं को शामिल किया जाए। इसमें इजीनियरिगं और मेडिकल की पढ़ाई भी शामिल है। नई शिक्षा नीति के द्वारा अब शिक्षा में त्रिभाषा फ्रॉमूला चलेगा। इसमें संस्कृत के साथ तीन अन्य भारतीय भाषा चुनने की भी आजादी होगी। सरकार ने पांचवी क्लास तक मातृभाषा, स्थानीय या क्षेत्रीय भाषा में पढ़ाई का माध्यम रखने की योजना बनाई है इसे क्लास आठ या उससे आगे भी बढाया जा सकता है। विदेशी भाषाओं की पढ़ाई सेकेण्डरी लेबल से होगी। नीति में अलग–अलग भाषाओं पर ही जोर दिया गया है। हांलाकि नई शिक्षा नीति में यह भी कहा गया है कि किसी पर कोई भाषा थोपी नही जाएगी।

भारतीय शिक्षा व्यवस्था में प्रायः हिन्दी, सस्कृत, अंग्रेजी तथा अन्य क्षेत्रीय भाषा के द्वारा अध्ययन–अध्यापन पर जोर दिया गया। जिसमें भारत के उत्तरीय क्षेत्र के राज्यों विशेषकर उत्तर प्रदेश के राज्य में हिन्दी, संस्कृत और अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा का संचालन किया गया। मातृभाषा के साथ ही अंग्रेजी तथा संस्कृत के विद्यालय खेाले गये। समय के साथ–साथ भाषाई आधार पर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर प्रभाव पड़ने लगा। वर्तमान में प्रायः अंग्रेजी को छोड़कर अंन्य भाषाओं में अध्ययन को द्वौयम दर्जे का माना गया। जबकि जिसका असर विद्यार्थियों की चिंतन शैली पर स्पष्ट रूप से दिखायी देने लगा।

जबकि उपरोक्त विवेचन से विभिन्न आयोग के सुझाव से स्पष्ट है कि यदि शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो तो व्यक्ति अधिक चितंन–शील होकर ज्ञान में वृद्धि करने में सहायक होगा तथा उसके शैक्षिक उपलब्धि में बढ़ौतरी होगी। इन्ही बातों को ध्यान में रखकर विद्यार्थी की चिंतन–शैली तथा शैक्षिक–उपलब्धि का अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है।

बहुत से भाषाविद् यह मानते हैं कि भाषा कुछ नही बंल्कि आदत सोचना है। जिसको उपयोग और नियत्रंण प्रयोग के द्वारा सीखा जाता है। भाषा किसी संस्कृति की सोच के तरीकों को प्रतिबिम्ब करती है तथा स्वंय भी उस संस्कृति से प्रभावित होती है। भाषा ही एक ऐसा साधन है, जिससे व्यक्ति से संम्प्रेषण कर एक दूसरे से विभिन्न विषयों का ज्ञान प्राप्त करते हैं। यदि देखा जाए भारत स्वंय मे विभिन्न संस्कृतियों और भाषाओं का संग्रहालय है। भाषा किसी भी शब्दकोश या व्याकरण के द्वारा संरक्षित नही की जाती है, क्योंकि भाषा जब तक बोली जाती है तब तक जिन्दा रहती है। किसी भी देश की सफलता का पैमाना उस देश में निवास करने वाली निवासियों की दशा से लगाया जाता है जिसका संबध शिक्षा की गुंणवत्ता पर होता है।

यहॉ भी स्पष्ट है कि शिक्षा की गुणवत्ता का सीधा संबध शिक्षण–अधिगम प्रकिया में प्रयुक्त कि जाने वाली भाषा का होता है। यदि शिक्षक, विद्यार्थीयों को मातृभाषा के अलावा अन्य किसी भाषा में शिक्षण कार्य सम्पादित कर रहा हो तो विद्यार्थियों के सीखने की गति में प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। उदाहरण स्वरूप गैर अंग्रेजी भाषाए व्यक्तियों में अंग्रेजी सीखने की वास्तविक ललक नही होती वह तो केवल सरकारी सेवा में जाने के लिए अंग्रेजी सीखता है। जिसका प्रतिकूल प्रभाव व्यक्ति के वास्तविक चिंतन, तर्कपूर्ण खोज और स्वतंत्र अभिवृत्ति पर पडता है। इसी लिये नई शिक्षा नीति वर्ष 2020 में मातृभाषा के द्वारा शिक्षण प्रधान करने को सबसे उपयुक्त माना हैं। मातृभाषा से सिखाने से प्रदान करने के साथ–साथ विद्यार्थियों में तार्किक चिंतन और उसके विश्लेषणात्मक कौशलों को निखारती है तो शिक्षा के

माध्यम ऐसे विद्यालयों कॉलजों तथा विश्वविद्यालयों जहां शिक्षण का माध्यम मातृभाषा न होकर कमजोर भाषा चाहे वह हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी तथा कोई अन्य भाषा में हो तो वह पर संचार समझ या समायोजन की समस्या बनी होती है।

माध्यमिक शिक्षा आयोग(1953) ने माध्यमिक स्तर पर शिक्षण का माध्यम क्षेत्रीय भाषाओं होने की पूर्वजोर वकालत की, लेकिन साथ में हिन्दी, अंग्रेजी का अध्ययन करने को भी कहॉ, भारत विभिन्न भाषाओं और विभिन्न संस्कृतियों का देश हैं। अतः शिक्षा मातृभाषा में न होकर अन्य भाषा में होने के कारण अपने देश की भावी नाागरिकों की रचनात्मक सोच और मौलिक चिंतन मे बांधक बनती जा रही हैं।

वर्तमान मे लगभग 6912 भाषाए लोगों के द्वारा बोली जाती हैं। जिनमें सबसे ज्यादा उभयनिष्ठ सहायक भाषा अंग्रेजी है। भारत बहु भाषाई देश है, जिसमें लगभग 74 प्रतिशत भारतीय इंडो आर्यन भाषा 30 प्रतिशत भारतीय द्रविड़ भाषा तथा शेष ऑस्टो एशियाटिक, तिब्बती वर्मी तथा अन्य भाषायें बोलते हैं। 1961 की जनसंख्या के अनुसार भारत में 1652 भाषाये दर्ज की गई जिनमें लगभग 33 जिसमें मातृभाषाओं ऐसी है जिनमें 1 लाख व्यक्तियों से कम हैं। भारत में कुल 22 राजकीय भाषायें हैं।

1971 की जनगंणना के अनुसार 281 भाषायें ऐसी है जिसको बोलने वाले 5 हजार से भी ज्यादा है। इस प्रकार 2001 की जनगंणना के अनुसार 30 भाषायें ऐसी है जिनको बोलने की संख्या 10 लाख से अधिक है भारत भी भाषाओं को वर्णित करने के लिये तालिका संख्या दी गयी है। जिससे स्पष्ट है कि भारत में सबसे अधिक हिन्दी भाषा को बोलने वाले है इसी प्रकार तालिका संख्या 1ण्1 का सम्बन्ध विभिन्न राज्यों की राज्यभाषाओं से है।

तालिका 1: राज्य और उनकी राजभाषायें

क सं	राज्य	राज्यभाषा	अतिरिक्त भाषा
1	उत्तर प्रदेष	तेलुगु	उर्दू
2	तेंलगना	तेलुगु उर्दू	.
3	अरूणाचल प्रदेष	अंग्रेजी	.
4	असम	असमिया	.
5	बिहार	हिन्दी	उर्दू
6	गोवा	कोकणी	मराठी
7	हरियाणा	हिन्दी	पंजाबी
8	हिमाचल प्रदेष	हिन्दी	टंग्रेजी
9	जम्मू कष्मीर	उर्दू	उर्दू
10	झारखंड	हिन्दी	उर्दू
11	कर्नाटक	कनड	.
12	केरल	मलयालम	.
13	मध्य प्रदेष	हिन्दी	.
14	महाराष्ट्रा	मराठी	.
15	मणिपुर	मणिपुरी	अंग्रेजी
16	मेघालय	टंग्रेजी	काष
17	मिजोरम	हिन्दी, अंग्रेजी	.
18	नागालैंड	टंग्रेजी	.
19	उड़ीसा	उडीया	.
20	पंजाब	पंजाबी	.
21	राजस्थान	हिन्दी, अंग्रेजी	अंग्रेजी
22	सिक्किम	टंग्रेजी	गुरूंग, लिम्बु, मगर, मुखिया, नेवाडी, राय, शेरपा, तमांग
23	तमिलनाडु	तमिल	अंग्रेजी
24	त्रिपुरा	बंगाली, कोकबोरोक	अंग्रेजी
25	उत्तर प्रदेष	हिन्दी	उर्दू
26	उत्तराखंड	हिन्दी	संस्कृत
27	पष्चिम बंगाल	बंगाली, अग्रेजी	उर्दू, अंग्रेजी, पंजाबी, नेपाली, संताली

तालिका संख्या 1.1 से स्पष्ट है कि भारत में विभिन्न राज्यों की राज्यभाषा में अलग–अलग है तथा उसी के अनुरूप शिक्षण कार्य भी किया जाना चाहिए क्योंकि पूर्व शोधों के परिणामों सेइंगित करते है कि मातृभाषा अथवा भाषा बालक की चिन्तन शक्ति का विकास करती हैं जिसमें बालकों की सोच में किसी कार्य को करने की और समस्या समाधान हेतु नवीनता और मौलिकता का विकास होता है।

5. चिंतन शैली

चितंन एक मानसिक प्रक्रिया है जो सभी प्राणियों में निहित होती है। कुछ लोगों ने इसे वातावरण से मिलने वाली सूचना का मानसिक जोड़–तोड बताया है यह एक ऐसी मध्यस्थ प्रकिया माना है जो किसी समस्या तथा समाधान यानि सही अनुक्रिया के मध्य में हेाती है। सिल्वर मैन के अनुसार– चिंतन एक ऐसी मानसिक प्रक्रिया है जो लोगों को उद्दीपन तथा घटनाओं के प्रतीकात्मक चित्रण द्वारा किसी समस्या का समाधान करने में मदद करता है। चितंन एक विचार करने की एक मानसिक प्रक्रिया जिसका आरम्भ समस्या के साथ होता है। यह समस्या के अन्त चलने वाली प्रक्रिया है।

चिंतन संज्ञात्मक और ज्ञानात्मक प्रक्रिया है। चिंतन अदृश्य होता है चितंन एक आंतरिक मानसिक प्रक्रिया है। चिंतन के दौरान बाहय क्रियाऐं बन्द हो जाती हैं या शारीरिक क्रियायें, चिंतन समस्या समाधान की क्रियायें हैं। चिंतन में अनेक विकल्प होते हैं चितंन में खोजपूर्व प्रवृत्ति होती है। चिंतन तर्क पूर्व, विवेकपूर्ण, लक्ष्य पूर्व की और केन्द्रीय होता है और उदेश्य पूर्व होता है।

6. शैक्षिक उपलब्धि

सुपर वर्ष(1957) के अनुसार शैक्षिकउपलब्धि या क्षमता परीक्षा यह ज्ञान करने के लिए प्रयोग किया जाता है कि व्यक्ति ने क्या और कितना सीखा तथा वह कई कार्य कितनी भलीभांति कर लेता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में अनेकों प्रकार के ज्ञान तथा कौशलों को प्राप्त करता है। उस ज्ञान तथा कौशल में कितनी दक्षता व्यक्ति ने प्राप्त की है जिसका पता उपलब्धि परीक्षण से ही चलता है। विद्यालय की विभिन्न कक्षाओं में अनेकों प्रकार के छात्र, शिक्षा ग्रहण करने के लिए आते हैं। समान मानसिक योग्यताओं से सम्पन्न न होने के कारण वे समय की अवधि में विभिन्न विषयों तथा कुशलताओं में विभिन्न सीमाओं तक प्रगति करते हैशैक्षिक उपलब्धि को विकास एंव वृद्धि, प्रत्यक्ष तथा व्यवहार टेस्ट, त्रिमासिक, षड्मासिक, प्रमाणित परीक्षण,मौखिक परीक्षण द्वारा माप सकते हैं।

7. अध्ययन की आवष्यकता

वर्तमान में बढ़ती हुई प्रतियोगिताओं को देखते हुए और बदलते समाज की मांग के अनुसार चुनौतीपूर्ण समाज में विद्यालय गतिविधियों को आगे बढ़ाने के लिए अंग्रेजी, हिन्दी तथा संस्कृत माध्यम के स्कूलों में पढाई के साथ–साथ अनेक पाठ्यसहगामी क्रियाओं का आयोजन कराया जाता है। जैसे–वाद–विवाद प्रतियोगिता तथा खेद कूद व सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि। जिसमें तीनों माध्यम के विद्यार्थी शारीरिक व मानसिक रूप से सक्रिय रहते हैं। हिन्दी माध्यम तथा संस्कृत माध्यम के विद्यार्थियों की अंग्रेजी बोलने में कम क्षमता होती है जिसका असर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर पडता है और वे अपने आप को अंगेजी माध्यम के विद्यार्थियों से कम आंकने लगते हैं जिससे उनका मानसिक विकास भी प्रभावित होता है। अतः इसके लिए विद्यालयों में स्वबोध, आत्म–नियंत्रण, सहयोग तथा जीवन के द्वंदों को सुलझाने जैसे गुण विकसित करने के उपायों को सम्मिलित किया जाना चाहिए।

छात्र–छात्राओं के संदर्भ में चिन्तनात्मक समस्यायें उनकी सीखने की क्षमता तथा बौद्धिक योग्यता पर प्रभाव डालती है। इसी कारण चितंनात्मक रूप में से विचलित होने पर किन्तु बौद्धिक रूप से योग्य होने पर भी विद्यार्थी परीक्षा में अच्छे अंक नहीं ला पाता। तार्किक योग्यता में चिंतन करने वाले मन तथा संवेगात्मक मन दोनों सम्मिलित होते हैं।

वर्तमान में बच्चों को बचपन से ही हार का सामना कर सकना, दूसरों के साथ मिल–जुलकर रहना, संवेगों पर नियंत्रण कर सकने की योग्यता विकसित करानी चाहिए। यही कारण है कि वर्तमान में विद्यार्थियों के सामने छोटी समस्या आने पर वे तुरन्त आत्म–हत्या के लिये तैयार हो जाते हैं जिसका परिणाम महाघातक होता है। विद्यालयों को जीवन कौशल अर्जित कराने का केन्द्र बनाना चाहिए ताकि उनमें भी जीने की कला आ जावे।

अतः स्पष्ट है कि भाषायें चितंन का आधार होती हैं तथा भाषाओं में निपुणता भाषा के प्रयोग से आती है। भाषाओं में भी सबसे अधिक प्रयोग की जानी भाषा मातृभाषा होगी, क्योंकि बालक जन्म से ही अपने विचारों को व्यक्त करने हेतु मातृभाषा का ही सहारा लेता है। अतः मातृभाषा से चिंतन शैली और शैक्षिक उपलब्धि भी प्रभावित होती है। इसी आशय को सन्दर्भ में लेते हुये शोधकर्ता ने विभिन्न भाषाओं में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की चिंतन शैली और शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना आवश्यक समझा।

8. समस्या कथन

हिन्दी, अंग्रेजी तथा संस्कृत माध्यम के अध्ययनरत् विद्यार्थियों की चितंन शैली तथा शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन।

9. शोध में प्रयुक्त पदों की परिभाषाएं

वर्तमान शोध में प्रयुक्त पदों को निम्नवत् परिभाषित किया गया है–

9.1 चितंन शैली

रॉस के अनुसार–चितंन मानसिक क्रिया का ज्ञानात्मक पहलू है यह मन की बातों से संम्बधित मानसिक क्रिया है। प्रस्तुत शोध में चितंन का तात्पर्यविद्यार्थियों के सम्मुख आने वाली उन तमाम चिंतन की समस्याओं से है जिनका उनके चिंतन स्तर द्वारा निवारण किया जा सके।

9.2 शैक्षणिक उपलब्धि

वर्तमान शोध में शैक्षिक उपलब्धि का अर्थ उच्चत्तर प्राथमिक विद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों की पूर्व परीक्षा के प्राप्तांक से है।

10. अध्ययन के उदेष्य

वर्तमान शोध के अध्ययन के उद्देश्य निम्नवत हैं–

1. हिन्दी, अंग्रेजी तथा संस्कृत माध्यम में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की चितंन शैली का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. हिन्दी, अंग्रेजी तथा संस्कृत माध्यम में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि कातुलनात्मकअध्ययन करना।
3. हिन्दी, माध्यम में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की चिंतन शैली तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संम्बध काअध्ययन करना।
4. अंग्रेजी माध्यम में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की चिंतन शैली तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संम्बध का अध्ययन करना ।
5. संस्कृत माध्यम में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की चिंतन शैली तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संम्बध का अध्ययन करना।

11. परिकल्पना

शोध के उद्देश्यों के आधार पर अध्ययन हेतु निम्नलिखित परिकल्पनायें का निर्धारण किया गया–

1. हिन्दी, अंग्रेजी तथा संस्कृत माध्यम में अध्ययनरत्विद्यार्थियों की चिंतन शैली में कोई सार्थक अन्तर नही है।
2. हिन्दी, अंग्रेजी तथा संस्कृत माध्यम में अध्ययनरत्विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नही है।
3. हिन्दी भाषा में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की चितन शैली तथाशैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सह–सबंध नही है।
4. अंग्रेजी भाषा में अध्ययन करने वालेविद्यार्थियों की चितन शैली तथाशैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सह–सबंध नही है।
5. संस्कृत भाषा में अध्ययन करने वालेविद्यार्थियों की चितन शैली तथाशैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सह–सबंध नही है।

12. परिसीमन

अध्ययन में परिसीमाओं से यह अर्थ होता है कि अध्ययन से सम्बन्धित आंकड़ों को एक निश्चित सीमा के अन्तर्गत एकत्रित किया जायेगा। वर्तमान अध्ययन का परिसीमन निम्न बिन्दुओं के आधार पर किया है–

- वर्तमान अध्ययन में हरिद्वार जिले के उच्चतर प्राथमिक विद्यालय स्तर पर अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों को चयनित किया गया है।
- वर्तमान अध्ययन में हिन्दी माध्यम के 60, अंग्रेजी माध्यम के 60 तथा संस्कृत माध्यम के 60 कुल 180 विद्यार्थियों को लिया गया है।
- वर्तमान अध्ययन में केवल दो चरों चिन्तन शैली और शैक्षिक उपलब्धि को सम्मिलित किया गया है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

1. सम्बन्धित साहित्य का सम्प्रत्ययः

सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण से शोधकर्ता यह निश्चित कर सकता है कि उसके द्वारा प्रस्तावित शोध से सम्बन्धित विषय पर विचारणीय कार्य पहले हो चुका है अथवा नही। शोध कार्य में अतीत में किये गये कार्यो एंव विचारों की नवीन शोध से जोड़ने का प्रयास किया जाता है।

साहित्य समीक्षा के दो पक्ष है– प्रथम पक्ष के अन्तर्गत समस्या के क्षेत्र में प्रकाशित सामग्री को पहचान तथा जिस भाग से हमें पूरी तरह अवगत नही हैं उसको पढ़ना। द्वितीय पक्ष में शोध अभिलेख के भाग में उन विचारों को लिखना निहित है। यह अवस्था शोधकर्ता के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं क्योकि यह साहित्य की महता पर भी निर्भर करता है।

शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की समस्याएं व्याप्त हैं। यदि शोधकर्ता को अपनी समस्या से सम्बन्धित नवीनतम् शोधों की पूर्णतया जानकारी नही है तो उसे अपनी समस्या क्षेत्र में किये गये शोधों की गहन समीक्षा की आवश्यता पडती है। साहित्य की समीक्षा का अर्थ–शोध के विशेष क्षेत्र के ज्ञान की व्यवस्था करना एंव ज्ञान की विस्तृत करके यह दिखाना कि उसके द्वारा किया गया अध्ययन इस क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योग होगा।

डब्लू.आर.बोर्ग के अनुसार– "किसी भी क्षेत्र का साहित्य उस आधारशिला के समान है जिस पर सम्पूर्ण भावी कार्य आधारित होता है यदि सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा इस नीव को दृढ़ नही कर लेते तो हमारे कार्य की प्रभावहीन एंव महत्वहीन होने की सम्भावना है अथवा पुनरावृत्ति भी हो सकती है।"

गुड,वार एंव स्केट्स के अनुसार– "एक कुशल चिकित्सक के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधी सम्बन्धी आधुनिकतम् खोजों से परिचित होता रहे, उसी प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु छात्र अनुसंधानकर्ता के लिए भी उस क्षेत्र से सम्बन्धित सूचनाओं एंव खोजों से परिचित होना आवश्यक है।"

उपयुक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि अनुसंधान कार्य में सम्बन्धित साहित्य का तात्पर्य उन सभी पाठ्य पुस्तकों, विश्वकोश, विशिष्ट

शब्दकोश, सामयिक प्रकाशन, सामान्य सन्दर्भ, पत्रावली, वार्षिक पुस्तकें, अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा पर सन्दर्भ पुस्तकें, शोध ग्रन्थ, लघु प्रबन्ध, शिक्षा सम्बन्धी सूची, अनुसंधान जर्नल, पत्र– पत्रिकाएँ, समाचार–पत्र आदि से है जो शोधकार्य में सहायक होती है।

2. सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन का महत्वः

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन शोध कार्य हेतु अत्यन्त महत्वपूर्ण एंव उपयेागी होता है क्योंकि इसके अभाव में शोधकर्ता उचित दिशा में एक कदम भी आगे नही बढ़ सकता है जब तक शोधकर्ता को ज्ञात न हो कि उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है।

शोध कार्य में प्रयुक्त विधि कौन सी है? तथा पूर्व शोंध में क्या निष्कर्ष प्राप्त हुए है तब तक वह न तो समस्या की निर्धारण कर सकता है और न ही शोधकार्य की रूपरेखा ही तैयार कर सकता है। इसके महत्व को निविवाद रूप में स्पष्ट किया जा सकता है। सी.बी.गुड के अनुसार– "मुद्रित साहित्य के अपार भण्डार की कुंजी अर्थपूर्ण समस्या और विश्लेषणीय परिकल्पना के स्रोत्र का द्वार खोल देती है तथा समस्या के परिभाषीकरण, अध्ययन की विधि के चुनाव तथा प्राप्त सामग्री के तुलनात्मक विश्लेषण में सहायता करती है। वास्तव में रचनात्मकता, मौलिकता तथा चिन्तन के विकास हेतु विस्तृत एंव गम्भीर अध्ययन आवश्यक है।" किसी भी क्षेत्र विशेष में ज्ञान प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि उस क्षेत्र विशेष से सम्बधित उपलब्ध साहित्य का पूर्ण विश्लेषणात्मक एंवम् गहन अध्ययन किया जाये जिससे महत्वपूर्ण तथ्य एवम् निष्कर्ष प्राप्त किए जा सके। अतः सम्बन्धित साहित्य अनुसंधान का महत्वपूर्ण पक्ष है अर्थात पुस्तकें, ज्ञान कोष, पत्र–पत्रिकायें, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबन्ध एंवम् अभिलेख सम्बधित साहित्य में निहित हैं। जिनके अध्ययन के माध्यम से शोधार्थी को समस्या चयन, उदेश्य–निर्धारण, अध्ययन प्रक्रिया एंवम् रूपरेखा निर्मित करने तथा उचित पथ पर अग्रसारित होने मे सहायता प्राप्त होती है।

सविता.एम.एस(1990) ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदत का उनकी गणित विषय में उपलब्धि तथा उनकी लिंग,व्यवसाय तथा आर्थिक स्थिति के सम्बन्ध मे सापेक्षित अध्ययन किया तथा गणित की उपलब्धि का सह–सम्बन्ध गणित की अध्ययन आदत से ऋणात्मक था।

विष्वकर्मा.एम.एल (1997) ने माध्यमिक स्तर के सह–शिक्षालयों एंव बालिका विद्यालयों में बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि पर अध्ययन पर आदत के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन किया और जिसके आधार पर और ग्रामीण सह शिक्षालयों तथा ग्रामीण बालिका विद्यालयों में बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया गया। जबकि अध्ययन आदत में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया।

दीक्षित.मिथलेष.कुमारी (1985) ने कक्षा–9 व 11वी में पढ़ने वाले किशोर लडकों और लड़कियों की बुद्धि और शैक्षिक उपलब्धि के का तुलनात्मक अध्ययन के उपरान्त पाया कि कक्षा–11 में अध्ययनरत छात्रों में बौद्धिक दृष्टि से उत्कृष्ट तथा अत्यधिक उत्कृष्ट बालक बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि और बुद्धिलब्धि में कोई अन्तर नही था। जबकि शेष सभी बौद्धिक स्तरों मे लड़कियां लड़कों की अपेक्षा उत्कृष्ट थी और सामान्य रूप में लड़कों की बुद्धिलब्धि लड़कियों की बुद्धिलब्धि की अपेक्षा उत्कृष्ट थी। लडको में बुद्धिलब्धि और शैक्षिक सम्प्रति के मध्य धनात्मकसह–सम्बन्ध पाया गया।

वर्मा.वी.पी (1992) ने शैक्षिक उपलब्धि और स्वभाव के बीच सह–सम्बन्ध का अध्ययन में पाया कि शैक्षिक उपलब्धि और स्वभाव के उत्तरदायी कारकों के बीच धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

कैनन.जय श्री (2005), "द कम्प्यूटर एज ए सपोर्ट टू द एचीवमेन्ट ऑफ द स्टूडेन्ट्स" शोध प्रपत्र राष्ट्रीय संगोष्ठी में स्पष्ट किया कि कम्प्यूटर के माध्यम से शैक्षिक उपलब्धि, अधिगम क्षमता तथा तकनीकी दक्षता संवर्धन में कम्प्यूटर सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता हैं।

वर्मा.अनुज एवं गिरिजेष कुमार (2007), "इफेक्ट आफ सी.ए.आई आन द एचीबमेन्ट आफ हैण्डीकैप्ड लरनर्स" शोध प्रपत्र द्वारा स्पष्ट किया कि कम्प्यूटर सहाय अनुदेशन सजीव विश्लेषण तथा पाठ्य–पुस्तक की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली अनुदेशन माध्यम है। छात्राध्यापकों मे मनोवाचक गुणों के विकास में कम्प्यूटर सहाय अनुदेशन एक प्रभावशाली एंव उपयोगी माध्यम उपलब्ध कराता है जिससे कही भी प्रतिपुष्टि प्राप्त की जा सकती है इसके माध्यम से छात्रों को विभिन्न प्रकार के संचार साधनों हेतु प्रशिक्षण का अवसर मिलता है जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि होती है।

अग्रवाल.वेद प्रकाश (2007) ने सेवापूर्व प्रशिक्षण एंव छात्रों की उपलब्धि बढ़ाने में सूचना एंव संचार तकनीकी की वैज्ञानिक भूमिका का अध्ययन किया और निष्कर्षों से पता चालता है कि सूचना और संचार तकनीकी स्वमूल्याकन एंव शिक्षको के वैयाक्तिक विचारों के मध्य सामंजस्य स्थापित करने के कारण यह छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाने में महत्वपूर्ण एंव उपयोगी कार्य करती है।

औक (2011) ने स्नातक स्तर के छात्रो के आयु वित्तीय स्तर तथा लिंग का शैक्षिक उपलब्धि प्रभाव का अध्ययन किया तथा परिवाहिक आयु सार्थक रूप से शैक्षिक उपलब्धि में कोई प्रभाव नही डालते है।

चावला आदि(2011) ने ग्यारहवी कक्षा के वाणिज्य 180 विद्यार्थियों के सामान्य बुद्धि, संवेगात्मक बुद्धि और शैक्षिक–उपलब्धि के अध्ययन के उपरान्त पाया कि विद्यार्थियों की सामान्य बुद्धि एंव शैक्षिक उपलब्धि और संवेगात्मक बुद्धि के मध्य धनात्मक सह–संबध होता है।

राठौर,पन्चोली (2013) ने शिक्षण माध्यम का छात्रों की चिंता के प्रभाव को अध्ययन के द्वारा ज्ञात किया कि अंग्रेजी माध्यम में शिक्षण कराने वाले अध्यापकों की चिंता का स्तर गुजराती माध्यम शिक्षण कार्य कराने वाले अध्यापकों से ज्यादा है।

भट्टोचार्य (2013) ने भारतीय ग्रामीण विद्यालयों में अंग्रेजी, माध्यम के शिक्षण पर शोध किया कि ग्रामीण में पाया कि अंग्रेजी माध्यम में षिक्षण कार्य के द्वारा गरीब छात्रों अपनी मातृभाषा से भी वांन्छित होने साथ विषयवस्तु को समझने में कठिनाई का महसूस करते हैं।

रति (2015) के द्वारा किये गये शोध, ''त्रिभाषा सूत्रय बहुभाषी भारत में एक चुनौती और क्रियान्वय'' में पाया कि हिन्दी, संस्कृत और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं की स्वीकारोक्ति की चुनौती को अंग्रेजी, फ्रेंच और स्पेनिस की तरह आर्थिक अवसर प्रदान कर सुलझाया जा सकता है।

सिन्दै(2015) ने अंग्रेजी माध्यम तथा गैर–अंग्रेजी माध्यम के शिक्षकों की अंग्रेजी के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन के निष्कर्षो से पता चलता है कि अंग्रेजी के प्रति अभिवृति का तुलनात्मक अध्ययन किया, अध्ययन के निष्कर्ष से पता चलता है कि अंग्रेजी तथा गैर–अंग्रेजी माध्यम वाले विद्यार्थियों के शिक्षकों की अभिवृत्ति अंग्रेजी भाषा के प्रति अनुकूल अभिवृत्ति रखते हैं।

डेविट, डुमेनिग (2017) के द्वारा किये शोध– ''मलेशिया में भाषा नीति और अंग्रेजी शिक्षण के तकनीकी विकास' के अध्ययन में पाया अंग्रेजी भाषा को शिक्षण फैसबुक, ब्लांग, व्हाट्सएप और तकनीकी चलित उपागम के द्वारा अधिक लोकप्रिय होती जा रही है जिसके कारण अंग्रेजी भाषा के अध्यापकों की तेजी से मांग बढती जा रही है।

फेन फंग (2018) ने चीनी विष्वविद्यालयों में अंग्रेजी शिक्षण की माध्यम की समीक्षा, वर्तमान झुकाव और भविष्य की दिषा की शोध

अध्ययन में पाया कि एक भाषा में षिक्षण करना नही होगा बल्कि शिक्षको बहुभाषायें कौशल में निपुण होना चाहिए।
नई षिक्षा नीति(2020) के द्वारा स्पष्ट किया गया कि शिक्षण का माध्यम मातृभाषा में सबसे बेहतर होगा।

3. सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण पर टिप्पणी

सम्बन्धित साहित्य के पुनरावलोकन के आधार पर कहा जा सकता है कि–

- अध्ययन के क्षेत्र में किये गये अनुसंधानों मे विविधतायें बहुत है। अधिकांश अनुसंधानों में सामाजिक–आर्थिक एंव लिंग तथा अध्ययन सम्बन्ध का अध्ययन किया गया है।
- अधिकांश अनुसंधानों में बुद्धि, परिवारिक, वातावरण, सामाजिक आर्थिक स्तर, चिन्ता तथा व्यक्तिगत कारकों के साथ शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया गया है।
- शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्धित अध्ययनों में अधिकांशतः शैक्षिक उपलब्धि के साथ बुद्धि लब्धि, रूचियों, अभिवृत्ति, जिज्ञासा, व्यक्तित्व तथा पारिवारिक वातारण का अध्ययन किया गया है।
- अधिकांश अनुसंधान वर्णनात्मक विधि पर आधारित है।
- अध्ययन में कुछ विदेशी अध्ययन है जो कि पूर्णरूपेण वर्णनात्मक विधि पर आधारित है जबकि भारतीय अध्ययन में वर्णनात्मक विधि के साथ सर्वेक्षणात्मक विधि का भी प्रयोग किया गया है।
- प्रस्तुत सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि उक्त अध्ययनों में शैक्षिक माध्यमों का अध्ययन का आधार नही बनाया है जबकि चिंतन अध्ययन माध्यमों से अधिक प्रभावित होती है।
- अधिकांश अध्ययनों में साधारण सांख्यिकीय तकनीकी का प्रयोग किया गया हैं। जैसे– मध्यमान, मानक विचलन , सह–सम्बन्ध गुणाक तथा टी–टेस्ट आदि।

4. पूर्व अध्ययन का वर्तमान अध्ययन से विचलन

वर्तमान में माध्यमिक स्तर के छात्रों के लिए शारीरिक, मानसिक एंव शैक्षिक विकास के लिए विभिन्न माध्यमों का प्रयोग किया जा रहा है। इन माध्यमों से विद्यार्थियों को शिक्षित करने तथा उनमें अध्ययन हेतु स्वस्थय आदतों के निर्माण करने एंव उनकी शैक्षिक उपलब्धि का विकास करने से सम्बन्धित विभिन्न प्रयास किये जा रहे है किन्तु माध्यमिक स्तर के हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के लिए अलग–अलग चिंतन शैली तथा शैक्षिक उपलब्धि से तुलनात्मक अध्ययन स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप नही किया जा सकता है। इसलिए प्रस्तुत शोध के माध्यम से शोधकर्ता ने इसे अपने अध्ययन का विषय बनाया है।

- पूर्व अध्ययन में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के किन्ही दो बिन्दुओं जैसे चिंतन शैली तथा शैक्षिक उपलब्धि, आकांक्षा एंव शैक्षिक उपलब्धि, समायोजन क्षमता एंव शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध में ही अध्ययन किये गये है जबकि वर्तमान अध्ययन में उच्चतर प्राथमिक विद्यालय स्तर के हिन्दी अंग्रेजी तथा संस्कृत के ग्रामीण एंव शहरी विद्यार्थियों के चिंतन शैली तथा शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया है।
- पूर्व अध्ययनों में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की क्षमताओं का अध्ययन अलग–अलग परिस्थितियों में किया गया है जबकि प्रस्तुत अध्ययन उत्तराखंड राज्य के हरिद्वार जनपद की शैक्षिक परिस्थितियों को ध्यान में रखकर किया गया है।
- पूर्व अध्ययनों की तरह प्रस्तुत अध्ययन भी वर्णनात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि पर आधारित है।

अनुसंधान विधि, प्रविधि एंव उपकरण

1. भूमिका

वर्तमान अध्ययन में हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी माध्यम के अध्ययनरत् विद्यार्थियों की चितंन शैली तथा शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन शीर्षक के अन्तर्गत शोधकर्ता द्वारा चयनित शोध विधि, जनसंख्या, न्यादर्श, और आंकडों के सग्रहण हेतु प्रयुक्त किये जाने वाले शोध उपकरण के चयन तथा उनके विवरण, और आकडों के विश्लेषण हेतु प्रयुक्त की गयी सांख्यिकीय प्रविधियों के चयन एवं उनके विश्लेषण से है।
अनुसधान का अर्थ पूर्णतया अभूतपूर्व तथ्यों, ज्ञान एंव घटनाओं की खोज करना ही नही, अपितु नवीनतम तथ्यों के सन्दर्भ में स्वीकृत निष्कर्षों के परिशोधन हेतु आलोचनात्मक ढंग से एंव विस्तारपूर्वक परीक्षण एंव अन्वेषण करना भी उसके अन्तर्गत आता है इसलिए उसे पुनः सर्च (खोज) की संज्ञा दी है। अनुसंधान एक प्रकिया है जिसमें प्रदत्तों के विश्लेषण के आधार पर किसी समस्या का विश्वसनीय समाधान ज्ञात किया जाता है।
अनुसधान एक व्यवस्थित तथा सुनियोजित प्रकिया है जिसके द्वारा मानवीय ज्ञान में वृद्धि की जाती है और मानव जीवन को सुगम तथा प्रभावी बनाया जाता है। अनुसन्धान में तथ्यों की खोज की जाती है तथा नवीन तथ्यों का प्रतिपादन किया जाता है।

डब्लू. एस. मुनरों कें अनुसार

"अनुसन्धान की परिभाषा समस्या समाधान के अध्ययन विधि के रूप में दी जा सकती है, जिसके समाधान आंशिक एंव पूर्ण रूप में तथ्यों एंव प्रदत्तों पर आधारित होते है। शोध कार्यो में तथ्यों, कथनों, विचारों, ऐतिहासिक तथ्यों और आलेखों पर आधारित होते है। शैक्षिक अनुसन्धानों का अन्तिम उदेश्य यह होता है कि सिद्धान्तों की शैक्षिक क्षेत्र में क्या उपयोगिता है प्रदत्तों का संकलन तथा व्यवस्था शोध कार्य नही है बल्कि एक प्राथमिक आवश्यकता है।" अतः इससे स्पष्ट होता है कि प्रदत्तों का विश्लेषण तथा उनके आधार पर निष्कर्ष निकालना और नये–नये सिद्धान्तों की खोज करना रिसर्च प्रकिया का आवश्यक तत्व है।

अनुसंधान विधियों के प्रकार

जार्ज जे मूले के अनुसंधान विधियों को तीन मौलिक रूपों मे विभाजित किया गया है जिसको चित्र संख्या 3ण्1 में दिखाया गया है।

1. अनुसंधान विधि

वर्तमान शोध समस्या की प्रकृति के अनुसार शोधकर्ता के वर्णात्मक शोध विधि के अन्तर्गत वर्तमान अध्ययन की आवश्यकता के अनुरूप सबसे उपयुक्त सर्वेक्षण तकनीक का प्रयोग किया है।

2. शोध अभिकल्प

अभिकल्प वह प्रकिया है जिससे किसी समस्या समाधान के लिये निर्णयो को कियान्वित किया जाता है। किसी अपेक्षित परिस्थिति को नियन्त्रित करने की दिशा में यह एक सकंलित पुर्वानुमान की प्रकिया है वर्तमान शोध अध्ययन सरल यादृच्छिक अभिकल्प का चयन किया गया है।

3. शोध जनसंख्या

वर्तमान शोध अध्ययन में शोध जनसंख्या का तात्पर्य हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत के माध्यम में अध्ययन करने वाले माध्यमिक स्तर के समस्त छात्र–छात्राओं से है।

4. न्यादर्श

करलिंगर के अनुसार– "न्यादर्श समग्र जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करने वाले अंशों का चयन है अतः स्पष्ट है कि न्यादर्श समग्र या जनसंख्या में से चुना वह अंश है जिसमें समग्र की अधिकांश विशेषताएं निहित होती है।

शोध में प्रयुक्त न्यादर्श विधि तथा आकार शोधकर्ता ने उपयुक्त न्यादर्श का चयन करने लिए यादृच्छिक न्यादर्श तकनीक का प्रयोग किया है। न्यादर्श हेतु माध्यमिक स्तर में पढ़ने वाले हिन्दी, अंग्रेजी तथा संस्कृत माध्यमों के कुल 180 छात्र–छात्राओं का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा किया गया। जिसमें हिन्दी में 60, अंग्रेजी में 60, तथा संस्कृत में 60, माध्यमों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों का चयन किया गया है जिसको की तांलिका संख्या 3.1 से स्पष्ट किया गया है।

5. शोध में प्रयुक्त उपकरण–

शोधकर्ता के द्वारा शोध से सम्बन्धित आंकडों सग्रहण हेतु निम्नलिखित दो मानकीकृत उपकरणों का उपयोग किया है।

5.1 चिंतन शैली मापनी–

1. चिंतन शैली मापनी का विवरण

प्रस्तुत लघु शोध में डॉ0स्मृति स्वरूप तथा डी0 के0 मेहता द्वारा निर्मित चितंन मापनी के माध्यम से आंकडों का एकत्रीकरण किया गया है। प्रस्तुत प्रश्नावली को 9 से 12 वर्ष की आयु के विद्यार्थियों में प्रयोग किया इसमें चार भाग दिये गये है। प्रत्येक भाग 25 अंक का है। इसमें प्रथम भाग स्मृति (Memory), द्वितीय भाग सम्प्रत्यय विकास (Concept Development),तृतीय भाग तार्किक (Reasoning) और चतुर्थ भाग समस्या–समाधान (Problem-Solving) से संम्बधित है।

2. चिंतन शैली परीक्षण की विश्वसनीयता–

चिंतन शैली परीक्षण को चार भागों के बांटा गया है जिसकी विश्वसनीयता को टेस्ट–रीटेस्ट विधि द्वारा ज्ञात किया गया है इस परीक्षण के विश्वसनीयता गुणांक (त) क्रमशः ण्62ए ण्70ए ण्67ए और ण्65 है तथा सम्पूर्ण परीक्षण का विश्वसनीयता का गुणांक ण्86 है।

3. चिंतन शैली मापनी का प्रशासन –

चिंतन शैली से सम्बंधित आकडों को मापने के लिए सर्वप्रथम विद्यालय के प्रधानाचार्य से शोंधकर्ता द्वारा शोध के उदेश्य को अवगत कराते हुए स्वीकृति ली गई। उसके उपरान्त छात्र–छात्राओं को प्रश्नावली से सम्बंन्धित निर्देश देते हुए और सभी को यह विश्वास दिलाया गया कि आपकी सम्पूर्ण सूचना गोपनीय रखी जायेगी। अतः आप सभी सूचना भरकर जमा करेंग। परीक्षण का प्रशासन 9 से 12 वर्ष के आयु के विद्यार्थियों पर किया गया। परीक्षण के मापन के लिये विद्यार्थियों को समुचित व्यवस्था के साथ कक्षा में बैठाया गया। विद्यार्थियों की जिज्ञासानुसार संक्षिप्त रूप से ही उन्हे लघु शोध का परिचय देकर परीक्षण प्रपत्र वितरित कर चिंतन मापनी परीक्षण के बारे में बताया गया तथा निर्देशों को पढकर उन्हें समझा दिया गया तथा व्यक्तिगत सूचना प्रपत्र भरवा कर छात्रों को परीक्षण शुरू करने को कहा गया परीक्षण की पूर्णता के लिए समय का कोई प्रतिबंध नही था। छात्रों को परीक्षण के पर्याप्त समय दिया गया परीक्षण में समय की कोई पाबन्दी नही थी किन्तु फिर भी छात्रों को कहा गया कि 30 से 35 मिनट में छात्र जवाब दे सकते है तथा जो उनको उचित जबाब लगता था विद्यार्थी उसको चिन्हित कर रहे थे। जिसके कारण उपयुक्तता के साथ उचित समय से परीक्षण को पूर्ण किया गया।

3.5.2. शैक्षिक उपलब्धि हेतु विगत वर्ष का परीक्षाफल

विद्यालय के कार्यालय से विद्यार्थियों की अन्तिम वर्ष के प्रांप्ताकों का विवरण परीक्षाफल से लिया गया है। जिसमें केवल वार्षिक परीक्षा के कुल प्रतिशत का उपयोग शैक्षिक उपलब्धि मापन हेतु प्रयोग वर्तमान शोध में किया गया है।

3.5 प्रश्नावली का अंकन

चिंतन मापनी में प्रश्नों विद्यार्थियों द्वारा दिये उत्तरों के अकंन मैन्युवल के आधार पर किया गया है। चितंन शैली परीक्षण को मापनी के लिए छात्रों की प्रतिकिया का मैन्युवल में दिये गये उत्तंर पत्राक से मिलान करके अंक प्रदान किये गये जिसमें सही उत्तर को एक अंक दिया गया तथा गलत उत्तर शून्य अंक प्रदान किया।

शोध का तथ्यात्मक विश्लेषणात्मक

वर्तमान अध्याय में शोध के उद्देश्य के अनुरूप परिकल्पना निर्मित परिकल्पनाओं के परीक्षण के लिए आकडों का सारणीबन्द्ध और विश्लेषण के पश्चात उनकी व्याख्या प्रस्तुत की गए है।

प्रस्तुत अध्याय में शोधकर्ता ने आकड़ो का विश्लेषण परिकल्पनाओं के अनुसार किया है।

4.1. उदेश्य-(1). हिन्दी, अंग्रेजी तथा संस्कृत माध्यम में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की चितंन शैली का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4.2. परिकल्पना-(1). हिन्दी, अंग्रेजी तथा संस्कृत माध्यम में अध्ययनरत्विद्यार्थियों की चितन शैली में कोई सार्थक अन्तर नही है।

तालिका 2: हिन्दी अंग्रेजी तथा संस्कृत माध्यम के विद्यार्थियों की चिंतन शैली का प्रसरण विश्लेषण का परिणामों का सांराश

स्त्रोत्र	वर्ग योग (ss)	मुत्तांश (Df)	माध्य वर्ग योग (MS)	एफ अनुपात (F)
समूह के मध्य	15381.11	2.00	7690.56	F=73.03 (सार्थक)*
समूह के अन्दर	18638.13	177.00	105.30	
कुल	34019.24	179.00	190.05	

*0.05 स्तर पर सार्थक

हिन्दी, अंग्रेजी तथा संस्कृत माध्यम के विद्यार्थियों का चितंन शैली का अध्ययन करने हेतु सम्बन्धित आकडें तालिका संख्या 4.1 में दिये गये हैंएफ मानों की सारणी से स्पष्ट है कि df = 2.00 व 177.00 पर .05 स्तर के लिए एफ का मान 3ण्04 है। क्योंकि प्राप्त एफ मान 73.03 है जो 3.04 से अधिक है इसलिए वह .05 स्तर पर सार्थक है।

अतः .05 स्तर पर कहा जा सकता है कि तीनों प्रतिदर्श हिन्दी, अंग्रेजी तथा संस्कृत भाषा के विद्यार्थियों की चिंतन शैली के मध्यमानों में अन्तर सार्थक है। जिसके आधार पर परिकल्पना संख्या–1 को अस्वीकृत किया जाता है ।

तालिका 3: सार्थक एफ अनुपात का तुकी (HSD) परीक्षण

समूह		$HSD_{.05}$ =4.4282	$Q_{.05}$ = 3.343	निर्णय
हिन्दी (T_1): अंग्रेजी (T_2)	M_1 = 71.30 M_2 = 68.13	3.17	Q = 2.39	असार्थक
हिन्दी (T_1): संस्कृत (T_3)	M_1 = 71.30 M_3 = 50.30	21.00	Q = 15.85*	सार्थक*
अंग्रेजी (T_2): संस्कृत (T_3)	M_2 = 68.13 M_3 = 50.30	17.83	Q = 13.46*	सार्थक*

*सार्थकता स्तर Q =.05 पर सार्थक

तालिका संख्या 4.2 के विश्लेषण स्पष्ट है कि हिन्दी, अंगेजी तथा संस्कृत भाषा के विद्यार्थियों कि चिंतन शैली के मध्यमान सार्थक रूप से भिन्न है लेकिन कौन–कौन से मध्यमान सार्थक रूप से भिन्न होंगे यह ज्ञात करने के लिए प्रसरण विश्लेषण उपरान्त तुकी विश्वसनीयता सार्थकता अंतर प्रक्रिया का प्रयोग किया गया जिसमें सम्बधित आकड़े तालिका संख्या–4.2 में निहित हैं।

तालिका संख्या 4ण्2 सें स्पष्ट है कि हिन्दी (M1=71.30) भाषा की चिंतन शैली अंग्रेजी (M2=68.13) भाषा की चिंतन शैलीके ण्05 मध्य स्तर पर सार्थक (Q= 2.39<.05=3.3426) अन्तर नही है।

जबकि हिन्दी व संस्कृत भाषा के विद्यार्थियों की चिंतन शैली (M1= 71.30), (M3=50.30) के मध्य ण्05 स्तर के मध्य सार्थक अन्तर (Q = 15.85> $Q_{.05}$ = 3.3426) है। इसी प्रकार अंग्रेजी (M2=68.13) तथा संस्कृत (M3=50.30) माध्यम में अध्यंयन विद्यार्थियों की चिंतन शैली के मध्य .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया।

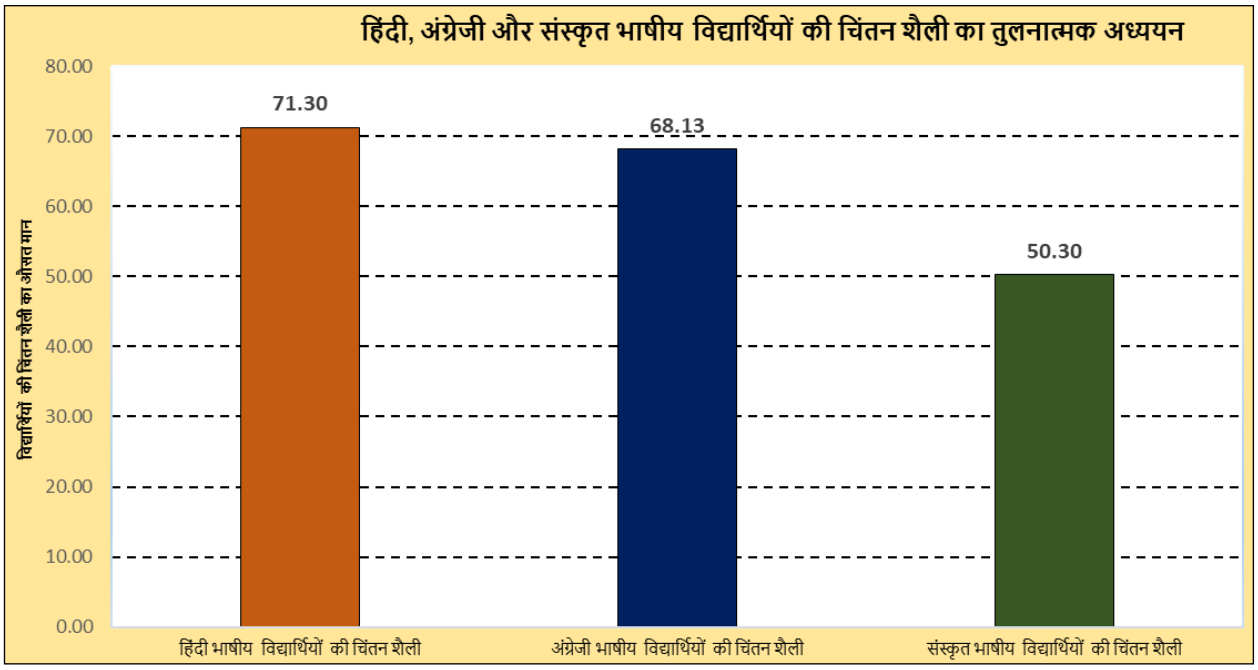

आरेख संख्या 1: हिन्दी, अंग्रेजी और संस्कृत भाषा में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की चिंतन शैली के मध्यमानों का चित्रण

आरेख संख्या:4.1 से स्पष्ट है कि हिन्दी, अंग्रेजी तथा संस्कृत भाषा के विद्यार्थियों की चिंतन शैली के आकडों का मध्यमान क्रमशः 71.30, 68.13 तथा 50.30 है।

जिससे स्पष्ट है कि हिन्दी भाषा के विद्यार्थियों की चिंतन शैली, अंग्रेजी भाषा के विद्यार्थियों से अधिक है। सबसे न्यून संस्कृत भाषा के विद्यार्थियों की चिंतन शैली है।

तालिका 4: हिन्दी, अंग्रेजी तथा संस्कृत माध्यम के विद्यार्थियों का शैक्षिक उपलब्धि प्रसरण विश्लेषण का परिणामों का सारांश

स्त्रोत्र	वर्ग योग (ss)	मुत्तांश (Df)	माध्य वर्ग योग (MS)	एफ अनुपात (F)
समूह के मध्य	2257.558	2	1128.7792	F = 18.251 सार्थक*
समूह के अन्दर	10947.079	177	61.8479	
कुल	13204ण्63	179		

*सार्थकता स्तर Q =.05 पर सार्थक

हिन्दी, अंग्रेजी तथा संस्कृत माध्यम के विद्यार्थियों का शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करने हेतु सम्बधित आकड़ें तालिका संख्या 4.3 दिये गये हैं। जिससे स्पष्ट है कि मुत्तांश (Df)=2 व 177 परण्05 सार्थकता स्तर पर एफ अनुपात का मान २ त्र 18ण्251 जो तालिका मान (F=3.04) से अधिक है।

अतः .05 स्तर पर स्पष्ट से परिकल्पना संख्या–2 को अस्वीकृत किया जाता है, अर्थात हिन्दी, अंग्रेजी तथा संस्कृत माध्यम में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।

तालिका 5: सार्थक एफ अनुपात के तुकी (HSD) परीक्षण

समूह		HSD.05 = 3.3937 HSD.01 = 4.2378	Q.05 = 3.3426	निर्णय
हिन्दी (T_1): अंग्रेजी (T_2)	M_1 = 66.42 M_2 = 71.21	4.79	Q = 4.72	सार्थक*
हिन्दी (T_1): संस्कृत (T_3)	M_1 = 66.42 M_3 = 62.55	3.87	Q = 3.81	सार्थक*
अंग्रेजी (T_2): संस्कृत (T_3)	M_2 = 71.21 M_3 = 62.55	8.66	Q = 8.53	सार्थक*

*सार्थकता स्तर Q_{05} त्रपर सार्थक है।

तालिका संख्या 4.4 के विश्लेषण स्पष्ट है कि हिन्दी, अंगेजी तथा संस्कृत भाषा के विद्यार्थियों कि शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान सार्थक रूप से भिन्न है लेकिन कौन–कौन से मध्यमान सार्थक रूप से भिन्न होंगे यह ज्ञात करने के लिए प्रसरण विश्लेषण उपरान्त तुकी विश्वसनीयता सार्थकता अंतर प्रक्रिया का प्रयोग किया गया जिसमें सम्बन्धित आकड़ें तालिका संख्या 4ण्3 में निहित है।

तालिका संख्या 4.3 से स्पष्ट है कि हिन्दी (M1= 66.42) भाषा की शैक्षिक उपलब्धि, अंग्रेजी भाषा की शैक्षिक उपलब्धि (M2=71.21) के मध्य .05 स्तर पर सार्थक अन्तर नही है ;फत्र 4.72>.05 =3.3426) जबकि हिन्दी व संस्कृत भाषा के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि (M1= 66.42, M3=62.55) के मध्यमान .05 स्तर के मध्य सार्थक अन्तर है (Q=3.81 > $Q_{.05}$ =3.3426)। इसी प्रकार अंग्रेजी (M2=71.21) तथा संस्कृत (M3=62.55) माध्यम में अध्ययन विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य .05 सार्थकता स्तर Q = 8.53>$Q_{.05}$ = 3.3426 पर सार्थक अन्तर पाया गया।

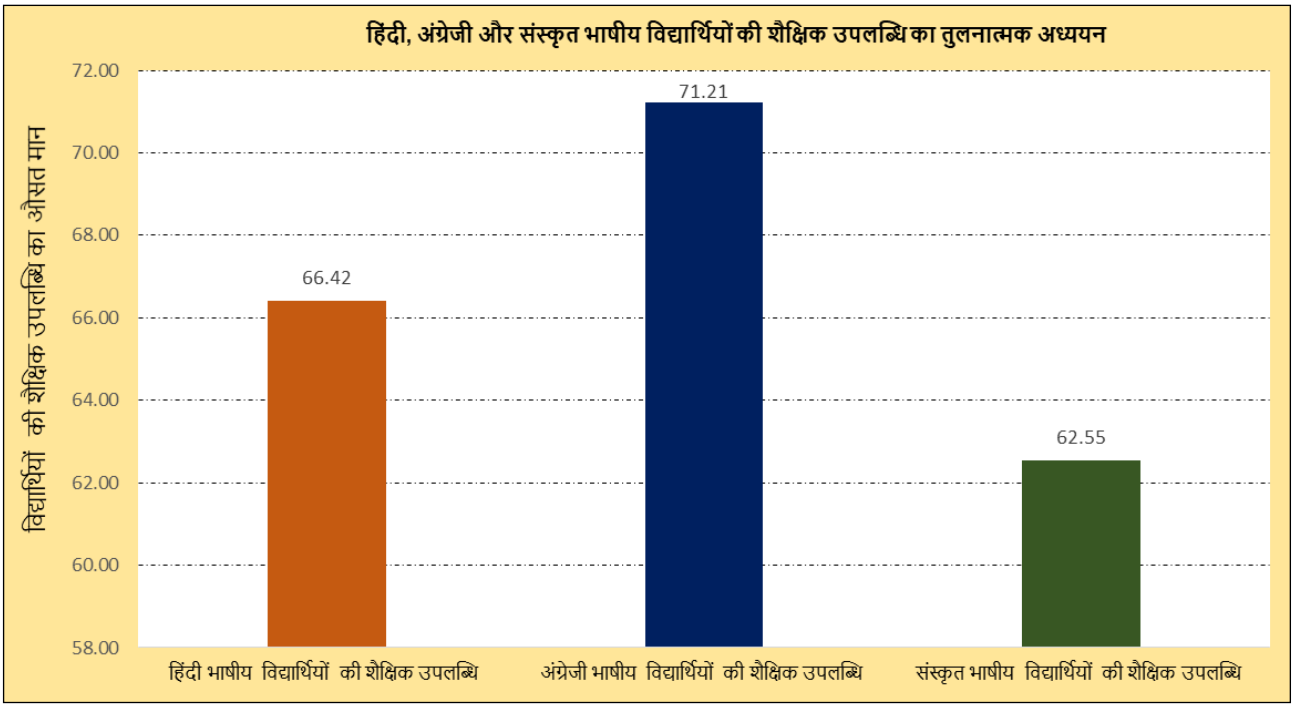

आरेख संख्या 2: हिन्दी, अंग्रेजी और संस्कृत भाषा में अध्ययन करने वालेविद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों का चित्रण

आरेख संख्या 4.2 से स्पष्ट है कि हिन्दी, अंग्रेजी तथा संस्कृत भाषा के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के आकडों का मध्यमान क्रमशः 66.42, 71.21 तथा 62.55 है।
जिससे स्पष्ट है कि हिन्दी भाषा के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, अंग्रेजी भाषा के विद्यार्थियों से कम है। सबसे न्यून संस्कृत भाषा के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि है।

तालिका 6: हिन्दी भाषीय विद्यार्थियों की चिंतन शैली तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसबंध का अध्ययन

समूह		सहसबंध गुणांक
हिंदी भाषीय विद्यार्थियों की चिंतन शैली	हिंदी भाषीय विद्यार्थियों की शैक्षिक –उपलब्धि	0.57

तालिका संख्या 4.5 से स्पष्ट है हिन्दी भाषा में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की चितंन शैली तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य परिमित धनात्मक सहसबंध (r=.57) है।

तालिका 7: अंग्रेजी भाषीय विद्यार्थियों की चिंतन शैली और शैक्षिक–उपलब्धि के मध्य सहसंबंध का अध्ययन

समूह		सहसबंध गुणांक
अंग्रेजी भाषीय विद्यार्थियों की चिंतन शैली	अंग्रेजी भाषीय विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि	0.08

तालिका संख्या 4.6 से स्पष्ट है अंग्रेजी भाषा में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की चितंन शैली तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्यअत्यन्त निम्म धनात्मक सहसम्बन्ध (r= 0.08) है।

तालिका 8: संस्कृत भाषीय विद्यार्थियों की चिंतन शैली और शैक्षिक–उपलब्धि के मध्य सहसंबंध का अध्ययन

समूह		सहसबंध गुणांक
संस्कृत भाषीय विद्यार्थियों की चिंतन शैली	संस्कृत भाषीय विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि	0.40

तालिका संख्या 4.7 से स्पष्ट है संस्कृत भाषा में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की चितंन शैली तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य परिमित धनात्मक सहसबंध (r= 0.40) है।

उपलब्धियॉं, निष्कर्ष एंव सुझाव

प्रस्तुत अध्याय में आकडों के विश्लेषण के उपरान्त पाये गये निष्कर्षो के आधार पर सुझाव तथा भावीअनुसंधान हेतु शोधकर्ता के लिए सुझाव का वर्णन किया गया है, जिनको की निम्मलिखित बिन्दुओं के अनुरूप लिया गया है।

5.1 शोध के निष्कर्ष

निष्कर्ष: 1

उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् हिन्दी तथा अंग्रेजी विद्यार्थियों की चितंन शैली में सार्थक अंतर नही पाया गया है। जबकि हिन्दी तथा संस्कृत में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की चिंतन भाषा में सार्थक अन्तर पाया गया। इसी प्रकार अंग्रेजी तथा संस्कृत भाषा में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की चिंतन में सार्थक अन्तर पाया गया ।
जिससे स्पष्ट है कि चिंतन शैली के आकडो के मध्यमान से हिन्दी भाषा के विद्यार्थियों की चिंतन शैली, अंग्रेजी भाषा के विद्यार्थियों से अधिक है। सबसे न्यून संस्कृत भाषा के विद्यार्थियों की चिंतन शैली है।

निष्कर्ष: 2

हिन्दी, अंग्रेजी भाषा के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक पाया गया इसीप्रकार हिन्दी तथा संस्कृत के विद्यार्थियों के मध्य और अंग्रेजी और संस्कृत भाषा के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य भी सार्थक अन्तर पाया गया।

निष्कर्ष: 3

हिन्दी भाषा के अध्ययनरत् विद्यार्थियों की चितंन शैली तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य परिमित धनात्मक सहसबंध **(r=.57)** है। अतः स्पष्ट है कि हिन्दी भाषा की चितंन शैली का शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पडता है।

निष्कर्षः 4

अंग्रेजी भाषा के अध्ययनरत् विद्यार्थियों की चितंन शैली तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य अत्यन्त निम्म धनात्मक सहसम्बन्ध (r= 0.08) है।

निष्कर्षः 5

संस्कृत भाषा में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की चितंन शैली तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य परिमित धनात्मक सहसबंध (r= 0.40) है।

5.2 निष्कर्षों के आधार पर सुझाव

शोध के निष्कर्षो से पता चलता है कि चितंन शैली का सीधा संबध विद्यार्थियों की मूल भाषा से है तथा मूल भाषा में शिक्षण कार्य कराये जाये तो विद्यार्थियों की चिंतन शैली मौलिकता बनी रहती है तथा जिससे उनकी शैक्षिक–उपलब्धि प्रभावित होती है अतः निम्न सुझाव अभिभावकों,नीति निर्धारकों और विद्यार्थियों के लिए शोधकर्ता यह सुझाव देता है कि–

1. अभिभावकों को अपने बालकों की चितंन शैली की मौलिकता की वृद्धि हेतु ऐसे विद्यालयों में अध्ययन हेतु प्रवेश दिलाना चाहिए जिसमें शिक्षण कार्य विद्यार्थियों की मूल भाषा में हो।
2. शिक्षकों को मूल भाषा में शिक्षण कार्य कराने चाहिए जिससे विद्यार्थियों की चितंन शैली और शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि हो सके तथा द्वितीयक भाषा के आधार पर अन्य भाषा का प्रयोग किया जा सके।
3. शिक्षा नीति निर्धारकों और प्रशासकों को विद्यालय में भाषायी अध्ययन हेतु नई तकनीकी और सभी सुविधाओं को जुटाना चाहिए ताकि विद्याथियों की चिंतन शैली और शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि हो सके जिसकी पुष्टि नई शिक्षा नीति 2020 में भी उद्वरित है।

5.3. भावी अनुसंधान हेतु सुझाव –

1. वर्तमान शोध में केवल हिन्दी, अंग्रेजी तथा संस्कृत विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया था, यह शोध अन्य भाषाओं में भी किया जा सकता है ।
2. वर्तमान शोध केवल 180 विद्यार्थियों में किया गया है अतः शोध को बडे न्यादर्श पर भी किया जा सकता है।
3. वर्तमान शोध केवल हरिद्वारा जनपद तक सीमित रहा। भावी शोध को अन्य क्षेत्रों में ही किया जा सकता है।
4. शोध में केवल शैक्षिक उपलब्धि और चिंतन शैली पर किया गया जबकि भावी अनुसधान में अन्य चरों को भी सम्मिलित किया जा सकता है।
5. वर्तमान शोध में केवल सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जबकि इस प्रकार के भावी शोध प्रयोगात्मक विधि द्वारा सम्पन किया जा सकता है।

संदर्भ सूची

1. त्रिवंणी एवं पटेल (1973)ए बी.ए अंग्रेजी और बिना अंग्रेजी के विद्यार्थियों के अध्ययन आदत और निष्पादन का तुलनात्मक अध्ययन किया। रिसर्च इन एजुकेषन स्टडीज, युनिवर्सिटी प्रकाशन,वाल्यूम–viv.पृ.स,–858,860
2. वर्मा.वी.पी.और सिन्हा ए.एन(1978), स्वतंत्र अध्ययन,एन0सी0ई0आर0टी0ए नई दिल्ली
3. सिंह.एच.(1984), पीएच0डी0 शिक्षाशास्त्र, पूर्वाचल विश्वविद्यालय, जौनपुर।
4. सविता.एम.एस (1990): पीएच0डी0 शिक्षाशास्त्र, पूर्वाचल विश्वविद्यालय, जौनपुर।
5. विष्वकर्मा.एम.एल(1997): पीएच0डी0 शिक्षाशास्त्र, पूर्वाचल विश्वविद्यालय, जौनपुर।
6. दीक्षित.मिथलेष.कुमारी(1985), फोर्थ सर्वे आफ एजूकेषनल रिसर्च, शोध प्रपत्र,
7. वर्मा.वी.पी (1992), स्वतंत्र अध्ययन,एन0 सी0 ई0 आर0टी0ए नई दिल्ली।
8. वर्मा.अनुज एवं गिरिजेष कुमार (2007), शोध प्रपत्र, अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी,एन0 सी0 ई0 आर0 टी0ए नई दिल्ली, वाल्यूम–2 पृष्ट संख्या–1460
9. अग्रवाल.वेद प्रकाश (2007), शोध प्रपत्र, अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली, द्वारा आई0 ए0 टी0 ई0 एंव कामनवेल्थ ऑफ लर्निग, पृष्ट संख्या–43
10. औक(2011),शोध प्रपत्र, रिसर्च प्रोसेडिंग डेवलपिंग क्वालिटि कल्चर इन हायर एजुकेशन, राष्ट्रीय संगोष्ठी, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद,
11. चावला आदि (2011), पीएच0डी0 शिक्षाशास्त्र, अलगप्पा विष्वविद्यालय, कर्नाटक।
12. राठौर,पन्चोली (2013) ए पीएच0डी0 शिक्षाशास्त्र,, डॉ राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद।
13. भट्टोचार्य (2013)ए एम0 एड0, लघु शोध प्रबंध, आर, आर, पी0 जी0 कालेज, अमेठी, सुल्तानपुर।
14. कौम्बा (2015), लघु शोध प्रबंध आई0 ए0 टी0 ई0 कामनवेल्थ ऑफ लर्निग, पृष्ट संख्या–58
15. रति (2015). शोध प्रपत्र, अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली,
16. सिन्दै(2015)ए शोध प्रपत्र, अदिस अबावा, इथियोपिया विश्वविद्यालय ।
17. अम्बिका प्रसाद सिंह, पीएच0डी0 शिक्षाशास्त्र,, आर0 आर0 पी0 जी0 कालेज अमेठी, सुल्तानपुर।
18. पी0 के0 साहूए शोध प्रपत्र, अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, दिल्ली विष्वविद्यालय दिल्ली,
19. राजेष तिवारीए पीएच0डी0 शिक्षाशास्त्र, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
20. इन्दुमती तिवारी, पीएच0डी0 शिक्षाशास्त्र, पूर्वाचल विश्वविद्यालय, जौनपुर।
21. अनोखे लाल, पीएच0डी0 शिक्षाशास्त्र, पूर्वाचल विश्वविद्यालय,
22. शिक्षा मनोविज्ञान, एस0 के0 अरूण।
23. शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार ।
24. सांख्यिकीय विधियॉ (डॉ0एस0पी0 गुप्ता) ।
25. शैक्षिक अनुसंधान की विधियॉ (डॉ0गया सिंह,डॉ0 अनिल राय)